भारतीय पुस्तकालय व्यवस्था का विकास: ऐतिहासिक से आधुनिक दृष्टिकोण

शुभम शर्मा*

सारांश -

भारतीय पुस्तकालय व्यवस्था का विकास एक समृद्ध यात्रा है, जो प्राचीन भारतीय सभ्यता से आरंभ होकर आज के डिजिटल युग तक फैली हुई है। यह ज्ञान, संस्कृति और समाज के विकास का प्रतिबिंब है। भारत में पुस्तकालयों की परंपरा वेदों और उपनिषदों के समय से रही है। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में विशाल ग्रंथालय थे, जहाँ पांडुलिपियाँ ताड़पत्रों और भोजपत्रों पर संरक्षित की जाती थीं। आधुनिक पुस्तकालय प्रणाली इसी क्रम से विकसित हुई है । आधुनिक काल में अनेक सार्वजनिक पुस्तकालय, शैक्षणिक संस्थानों के पुस्तकालय और शासकीय पुस्तकालय स्थापित हुए। ब्रिटिश राज्य से स्वतंत्रता के पश्चात् 1954 में डेल्ही पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना यूनेस्को और भारत सरकार के सहयोग से हुई। पंचवर्षीय योजनाओं में पुस्तकालयों के विकास को प्राथमिकता दी गई। राज्य और जिला स्तर पर पुस्तकालय नेटवर्क का विस्तार हुआ। राज्य पुस्तकालय अधिनियमों के माध्यम से सार्वजनिक पुस्तकालयों को कानूनी मान्यता और वित्तीय सहायता मिली। आधुनिक युग में परिवर्तन सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से पुस्तकालयों का डिजिटलीकरण हुआ। ई-पुस्तकालय, ऑनलाइन डेटाबेस, और डिजिटल कैटलॉग का महत्त्व स्थापित हुआ। राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) जैसे प्लेटफॉर्म ने लाखों डिजिटल संसाधनों को एक मंच पर उपलब्ध कराया। इसी प्रकार ग्रन्थपाल की भूमिका में भी अनेक परिवर्तन हुए हैं वे अब केवल पुस्तकों के संरक्षक से बढ़कर सूचना प्रबंधन और डिजिटल साक्षरता के मार्गदर्शक की भूमिका में परिवर्तित हो गए हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय पुस्तकालय व्यवस्था का विकास केवल पुस्तकों के संग्रह तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक और तकनीकी विकास का सशक्त माध्यम बना है। आज के डिजिटल युग में यह व्यवस्था नई चुनौतियों और संभावनाओं के साथ निरंतर प्रगति कर रही है। इसी का संक्षिप्त स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है।

कुञ्जीशब्द - भारतीय, पुस्तकालय, डिजियुग, ज्ञान, संस्कृति, समाज, पुस्तकालय, वेद, उपनिषद, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, विश्वविद्यालय, ग्रंथालय, पांडुलिपियाँ, ताड़पत्र।

प्रस्तावना -

लेखन के प्रारंभ से लेकर आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर तक पुस्तकालय अनेक संघर्षों को झेलते हुए आज के इस वर्तमान स्वरूप में है , पुस्तकालय प्रत्येक संस्था में उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिस प्रकार मानव शरीर में हृदय। प्राचीन काल से अनेक परिवर्तन देखते हुए पुस्तकालय आज सूचना एवं प्रौद्योगिकी के केंद्र बन चुके है। जहां पहले केवल भौतिक रूप में ही ज्ञान को ग्रहण किया जाना संभव था आज आधुनिक तकनीक की सहायता से पुस्तकालयों को भी एक नया रूप मिला है जिससे तीव्र गति में सूचनाओं तक पहुंच सुलभ हो चुकी है। पुस्तकालय मानव सभ्यता के पालने के रूप में अपनी छाप छोड़ने के साथ ही यह ज्ञान के संरक्षण एवं उसके प्रचार प्रसार के प्रमुख केंद्र रहे हैं। प्राचीन काल में जहां ज्ञान के स्रोत पांडुलिपियों ताम्रपत्र ताड़ पत्र अभिलेख शिलालेख हुआ करते थे वही आज आधुनिक काल में मुद्रण ने पुस्तकालय को ज्ञान एवं अनुसंधान की एक नई दिशा प्रदान की है साथ ही वर्तमान में डिजिटल पुस्तकालयों की सहायता से पाठकों की सुलभता हेतु ऑनलाइन रिसोर्सेस प्रदान कर पाना भी संभव हो पाया है।

- **प्राचीन पुस्तकालय -**

ज्ञान का संचार उसी समय से निरंतर चला आ रहा है जब से मानव सभ्यताओं ने जन्म लिया है, ज्ञान को प्रकट करने एवं अपने विचारों को व्यक्त करने के माध्यम चाहे भिन्न हो सकते हैं, परंतु इस ज्ञान को संजोकर रखने एवं आवश्यकता के समय उसे एक सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना ही भारतीय इतिहास को एक गौरवशाली इतिहास के रूप में वैश्विक पटल पर हीरे की भांति चमक बिखरते हुए संपूर्ण राष्ट्र को गौरवान्वित महसूस करवाता है। किसी भी गौरवशाली राष्ट्र के इतिहास की नींव व आधार-स्तम्भ उस राष्ट्र के पुस्तकालय रहते आए हैं, पुस्तकालय अपने अंदर संपूर्ण ज्ञान के साथ-साथ अनेक रहस्यात्मक ग्रन्थ जैसे वेद, वेदांत, उपनिषद् , दर्शन इत्यादि को भी संभाले रखा है एवं समय-समय पर उनका प्रचार- प्रसार होता आया है। पुस्तकालय केवल पांडुलिपियों, ताम्रपत्र, अभिलेखों को ही संग्रहित नहीं करते थे अपितु वह एक उत्कृष्ट राष्ट्र के इतिहास का पालन पोषण करते थे, इसीलिए ही प्राचीन पुस्तकालय केवल पुस्तकालय न होकर संग्रहालय के रूप में भी कार्य किया करते थे। प्राचीन काल में पांडुलिपियों, ताम्रपत्र, भोजपत्र इत्यादि के निर्माण की प्रक्रिया अधिक लंबी एवं जटिल हुआ करती थी, इसके चलते आम जनमानस हेतु उन्हें पाठन करने, स्पर्श करने और उपयोग करने की अनुमति नहीं हुआ करती थी।

नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन काल का सबसे पहला आवासीय विश्वविद्यालय रहा है जहां केवल देश ही नहीं परंतु विदेश से भी छात्र एवं शोधार्थी वहां आकर अध्ययन किया करते थे, नालंदा के इतिहास को अधिक सुशोभित उसका पुस्तकालय (धर्मगंज) करता था, जिसे

मुख्यतः तीन भागों में वर्गीकृत किया गया था रत्नसागर, रत्नरंजका और रत्नोदधि जो की नालंदा एवं उसके पुस्तकालय को वैश्विक पहचान प्रदान करते थे।

यह कहना कदापि अतिशयोक्ति नहीं होगी कि संपूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास को नालंदा के पुस्तकालय ने अपनी गोद में ले रखा था। परंतु यह भी अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है कि इतिहास को संरक्षण करने वाला पुस्तकालय एक दिन स्वयं ही इतिहास बन जाएगा ऐसी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। इतिहास के उन क्षणों को याद करते हुए प्रत्येक भारतीय नागरिक नि:शब्द और मौन की स्थिति में पहुंच जाने के साथ ही मानो उसके घाव हरे एवं आंखें नम हो गई हों। क्योंकि नालंदा में साक्षात् माँ सरस्वती रूपी उस पुस्तकालय में पुस्तकों के रूप में पल रहे नवजात बच्चों को एक तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी द्वारा आग लगाकर पल भर में ही नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। पुस्तकालय की अग्नि कई माह तक ठंडी न हो सकी और अनेक दिनों तक धधकती रही। परंतु भारत का इतिहास इतना विशाल रहा है कि उसे किसी एक पुस्तकालय को नष्ट करने से नहीं मिटाया जा सकता। समय अनुसार उस पुस्तकालय का जीर्णोद्धार करवा कर पुनः इतिहास को जीवित रखने का संपूर्ण प्रयास उसी समय से आज तक चला आ रहा है।

<u>प्राचीन भारतीय पुस्तकालय की विधियां</u> -

- **संरचना -**

प्राचीन काल से ही भारत सनातन संस्कृति एवं आस्था का केंद्र रहा है जिसके चलते राष्ट्र में अनेक उत्कृष्ट शैलियों ने जन्म लिया है उन्हें के आधार पर भारत में अनेक मंदिरों एवं मठों की स्थापना हुई , यह आध्यात्मिक केंद्र केवल धर्म के प्रचार तक ही सीमित न होकर यह ज्ञान का प्रचार प्रसार करने हेतु महत्वपूर्ण योगदान में भूमिका निभाते थे। जिसके दौरान ग्रंथों की रचनाएं होने के साथ-साथ उनके संरक्षण हेतु पुस्तकालयों का भी उदय होना प्रारंभ हुआ यह पुस्तकालय मुख्यतः बड़े मंदिरों एवं गुरुकुल में हुआ करते थे। नालंदा,तक्षशिला,विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालयों में विशाल पुस्तकालय के उल्लेख देखने को मिलते है। नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय धर्मगुंज के नाम से विश्व विख्यात था जिसे मुख्यतः तीन खण्डों में विभाजित किया गया था रत्नसागर, रतनरंजक, रत्नोदधि जो कि अपनी-अपनी विशेषताओं हेतु प्रसिद्ध थे।

- **संग्रहण विधि -**

प्रारंभिक काल में जब मुद्रण हेतु कागज नहीं हुआ करते थे तब उनके स्थान पर भोजपत्र एवं ताम्रपत्र की सहायता से पांडुलिपियों का निर्माण किया जाता था, इनके निर्माण की प्रक्रिया अधिक कठिन एवं जटिल होने के कारण इन्हें संरक्षित कर कर रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हुआ करता था, उस स्थिति में उन्हें कपड़ों में लपेटकर लकड़ी एवं धातु की संदूकों या अलमारी में रखा जाता था। पांडुलिपियों के संरक्षण हेतु हल्दी, नीम का तेल एवं कपूर जैसी प्राकृतिक विधियों का प्रयोग किया जाता था जिससे उन्हें वातावरण एवं जीवों से सुरक्षा प्राप्त हो सके।

- **वर्गीकरण -**

वर्गीकरण से आशय किसी वस्तु को उसके आकार, गुण, रंग, विषयवस्तु इत्यादि के आधार पर वर्गीकृत करना, परंतु बात जब पांडुलिपियों के परिप्रेक्ष्य में होती है तो इन्हें मुख्यतः विषयों के आधार पर ही वर्गीकृत किया जाता था जैसे वेद, वेदान्त, उपनिषद्, दर्शन इत्यादि।

- **आधुनिक पुस्तकालय -**

विश्व की सबसे बड़ी मानव सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी सभ्यता के विकास से लेकर वर्तमान तक पुस्तकालय सदैव ज्ञान संरक्षण एवं उसके प्रचार प्रसार के माध्यम बने रहें है। प्राचीन काल के पुस्तकालय केवल पांडुलिपियों का ही संरक्षण करते थे एवं ज्ञान के केन्द्रों को संग्रहालय से जोड़ते थे तो यह भी असत्य नहीं होगा क्योंकि संग्रहालय भी पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान का प्रचार प्रसार और संस्कृति के बचाव में बहुमूल्य योगदान निभाते आये हैं। परंतु वर्तमान के परिपेक्ष में देखा जाए तो पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संग्रहण केंद्र तक ही सीमित न होते हुए यह पुस्तकालय एवं सूचना के केंद्रों के रूप में उभर कर सामने आए हैं। यह सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित बहुआयामी संस्थाएं बन चुकी हैं, यह केवल अध्ययन का स्थान ही मात्र न होकर, सूचनाओं को प्रत्येक व्यक्ति तक समान पहुंच, डिजिटल सेवाएं, शोध सहयोग और सामाजिक परिवर्तन के केंद्र भी बन चुके हैं। सामान्य तौर पर देखा जाए तो आधुनिक पुस्तकालय को भी दो पृथक-पृथक श्रेणियां में विभाजित किया गया है , पहले मुद्रित जहां पुस्तक एवं अन्य पार्टी सामग्री भौतिक रूप में उपलब्ध हो जाती है वहीं दूसरा उसी के विपरीत एवं मुद्रित का नवीन और विस्तारित स्वरूप वह डिजिटल पुस्तकालय के नाम से जाना जाता है, जिसमें पुस्तक एवं पाठ्य सामग्री अपने भौतिक स्वरूप में ना होते हुए डिजिटल स्वरूप या इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में होती है, जिससे किसी भी स्थान एवं किसी भी समय पर आवश्यकतानुसार ज्ञान को प्राप्त करने में विशेष सहायता मिलती है।

भौतिक पुस्तकालय अपनी पाठ्यसामग्रियों में मुख्यतः पुस्तक, पत्रिकाएँ, समाचारपत्र इत्यादि को संग्रहीत करते हैं एवं अध्ययन हेतु विशेष कक्ष की व्यवस्थाओं के साथ-साथ कंप्यूटर लैब एवं इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं, ठीक उसी के विपरीत डिजिटल पुस्तकालय जो की सामग्रियों के तौर पर ई बुक्स, ई जर्नल्स, डेटाबेस इत्यादि का संग्रहण करते हुए उन्हें आवश्यकता के समय पर उपयोग में लाने हेतु ओपेक (ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग) की सहायता लेते हैं जिससे खोज में आसानी एवं समय की बचत हो सके।

डिजिटल पुस्तकालय इ-कंसोर्सियम के रूप में इन्फ्लिबनेट एवं डेलनेट जैसे बड़े नेटवर्क का प्रयोग करते हैं, वहीं अगर बात डिजिटल रिपोजिटरीज की आती है तो उसमें डी स्पेस अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आधुनिक पुस्तकालय को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु सॉफ्टवेयर की अत्यधिक आवश्यकता होती है पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में कोहा सॉफ्टवेयर अपना एक विशेष स्थान

रखता है यह एक फ्री और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर है जो कि अपने मॉडल्स में लचीलापन भी प्रदान करता है यहां लचीलेपन से आशय है कि इसके मॉडल्स कस्टमाइजेबल होते हैं जिन्हें हम अपनी सुविधा अनुसार बड़ा एवं घटा भी सकते हैं।

पुस्तकालय विज्ञान में सोल सॉफ्टवेयर भी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है जो की इन्फ्लेमेटरी का ही एक अभिन्न अंग है।

डिजिटल लाइब्रेरी की विशेषताओं की बात की जाए तो उसे संसाधनों तक पहुंच आसान हेतु किसी भी समय एवं किसी भी स्थान पर आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है, साथ ही पाठक के समय की बचत भी इसका सकारात्मक महत्वपूर्ण बिंदु है परंतु इसके अनेक दुष्परिणाम भी देखे जा सकते हैं जैसे सभी गतिविधियों को संचालित करने हेतु एक कुशल एवं योग्य व्यक्ति को ही जिम्मेदारी दी जा सकती है, यह आर्थिक दृष्टि से महंगे भी होते हैं क्योंकि इनमें आधुनिकता की तकनीक का प्रयोग किया जाता है एवं यहां कॉपीराइट के संदर्भ में भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

<u>प्राचीन भारतीय पुस्तकालय बनाम आधुनिक पुस्तकालय</u> -

- **सूचना एवं स्वरूप -**

प्राचीन पुस्तकालय मुख्यतः मंदिर, मठ, विहार एवं विश्वविद्यालय आदि में हुआ करते थे ठीक इसी प्रकार आधुनिक पुस्तकालय स्वतंत्र भावनाओं डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर एवं ई-लर्निंग लैब में स्थापित किए जाते हैं। जहां प्राचीनता की बात की जाए तो नालंदा तक्षशिला विक्रमशिला इसके बहुत अच्छे उदाहरण हैं ठीक उसी प्रकार आधुनिकता में नेशनल लाइब्रेरी आफ इंडिया (कोलकाता) , नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया (आईआईटी खरगपुर) , एवं देश के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएम, एनईटी इत्यादि के पुस्तकालय भी आधुनिक तकनीकों से सुशोभित है। यह सभी पुस्तकालय आधुनिक पुस्तकालयों की श्रेणी में एवं उदाहरण के तौर पर उत्कृष्ट स्थान रखते हैं।

- **संग्रहण विधि -**

जहां उस काल में लेखन हेतु भोजपत्र, ताम्रपत्र एवं कपड़ों का प्रयोग कर कर पांडुलिपियों की रचना की जाती थी एवं भौतिक रूप में उन्हें संभाल कर रखा जाता था, वही आधुनिक पुस्तकालय में ई बुक्स ए रिसोर्स डेटाबेस को सॉफ्टवेयर की सहायता से क्लाउड पर स्टोर किया जाता है एवं डिजिटल रिपोजिटरीज का निर्माण किया जाता है और अंत में ओपेक की सहायता से ज्ञान को वितरित किया जाता है।

- **वर्गीकरण -**

उस समय वर्गीकरण का आधार केवल विषयों को ही माना जाता था जैसे वेद दर्शन ज्योतिष इत्यादि परंतु आज वर्गीकरण हेतु अंतरराष्ट्रीय मानकों की सहायता ली जाती हैं जैसे डिवाइड डेसिमल क्लासिफिकेशन, यूनिवर्सल डेसिमल क्लासिफिकेशन, लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस

क्लासिफिकेशन इत्यादि ठीक इसी प्रकार भारत भी अपनी एक स्वदेशी भारतीय पद्धति को अपनाता है जिसे कोलन क्लासिफिकेशन के नाम से जाना जाता है जिसके जनक डॉक्टर से रंगनाथन को माना जाता है वह भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के जनक भी माने जाते हैं। डॉक्टर रंगनाथन द्वारा पुस्तकालय विज्ञान के आधार स्तंभ स्वरूप पांच नियम दिए गए हैं , नियमों का संकलन कर एक पुस्तक का निर्माण किया गया जिसे "द फाइव लॉ ऑफ लाइब्रेरी साइंस" के नाम से जाना जाता है।

- **संचालन एवं प्रबंधन -**

पहले आचार्य एवं गुरुओं द्वारा ही पुस्तकालयों को पूर्ण रूप से संचालित किया जाता था वहीं आज अनेक सॉफ्टवेयर एवं डेटाबेस की सहायता से यह कार्य पहले की अपेक्षा अधिक सुलभ एवं सीमित समय में कर पाना संभव हुआ है लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर की बात करें तो कोहा, सोल, ई ग्रंथालय, डी स्पेस ने पुस्तकालय प्रबंधन को बहुमूल्य योगदान दिया है।

- **रखरखाव -**

पहले ऐतिहासिक ग्रंथों के नष्ट हो जाने पर उनको पुनः पहले के भांति सुव्यवस्थित करना असंभव सा था जैसे नालंदा के पुस्तकालय को विदेशी आक्रांता द्वारा जला कर नष्ट किया गया उसके बाद धीरे-धीरे ज्ञान भी नष्ट हो गया। परंतु आधुनिक दौर में ज्ञान एवं सामग्रियों को डिजिटल फॉर्म में परिवर्तित कर कर क्लाउड पर चढ़ा सकते हैं जिससे पुनः प्राप्ति में आसानी हो जाती है।

- **निष्कर्ष -**

प्राचीन भारतीय पुस्तकालय मुख्यतः ज्ञान संरक्षण, धार्मिक दर्शन संबंधी सामग्रियों को अपने अंदर संजोकर रखने थे उनका मुख्य उद्देश्य प्राचीन विद्या एवं ज्ञान का संरक्षण कर विद्वानों द्वारा चल रही शोध में सुविधा उपलब्ध करवाना था। वहीं आधुनिक पुस्तकालय केवल ज्ञान के संग्रहण तक ही सीमित नहीं रहे हैं अपितु वर्तमान में यह पुस्तकालय एवं सूचना के केंद्रों के रूप में उभर कर सामने आ रहे हैं , जहां सूचना, शोध, शिक्षा, मनोरंजन एवं जीवन पर्यंत सीखने के बहुआयामी केंद्रों के रूप में यह समाज को नवीन दिशा प्रदान कर रहे हैं।

- **सन्दर्भ -**

- Ranganathan, S. R. The Five Laws of Library Science. Madras Library Association, 1931.
- Xuanzang. (1884). Si-Yu-Ki: Buddhist Records of the Western World (Trans. Samuel Beal). London: Trubner & Co.
- https://nalandauniv.edu.in/
- https://ndl.iitkgp.ac.in/
- https://www.inflibnet.ac.in

*देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)।